द्वारा

डॉ आशीष सिसोदिया

1. पूर्वयोगात्मक या पुरः प्रत्यय प्रधान - इन भाषाओं में प्रत्यय के स्थान पर उपसर्ग का प्रयोग होता है। शब्द वाक्य के अन्तर्गत बिल्कुल अलग-अलग रहते हैं। शब्दों की रूप रचना में सम्बन्ध तत्त्व केवल आरंभ में लगता है। अफ्रीका की बांटू भाषा इसका विशेष उदाहरण है। जैसे - जुलू भाषा में - उमु = एकवचन का चिह्न, अब = बहुवचन का चिह्न, न्तु = आदमी, न्तु = आदमी, न्ग = से । इनके योग से उमुन्तु = एक आदमी, अबन्तु = कई आदमी, न्ग उमुन्तु = आदमी से, न्ग अबन्तु = आदमियों से। यहाँ ’न्तु‘ (आदमी) अन्त में आ रहा है एवं इसके आगे उपसर्ग लगाकर अर्थ परिवर्तित हो रहे हैं। अंग्रेजी में वित उम - मेरे लिए में रचना तत्त्व पहले है।

2. मध्य योगात्मक या अन्तः प्रत्यय प्रधान - इसके उदाहरण भारत तथा हिन्द महासागर के द्वीपों से लेकर अफ्रिका के मेडागास्कर आदि द्वीपों तक फैली भाषाओं में मिलते हैं। इसमें प्रायः शब्द दो अक्षरों के होते हैं और जैसा कि मध्य योगात्मक नाम से स्पष्ट है, संबंध तत्त्व दोनों के बीच जोड़े या रखे जाते हैं। उदाहरण - मुण्डा कुल की संथाली भाषा में - ’मंझि‘ त्र मुखिया, प = बहुवचन का चिह्न, मपंझि त्र मुखिया लोग। (यहाँ ’प‘ बीच में जोड़ा गया है।) इसी प्रकार दल = मारना, दपल = परस्पर मारना‘ में भी ’प‘ का प्रयोग बीच में किया गया है।

3. पूर्वान्त योगात्मक - इस श्रेणी की भाषाओं में संबंध तत्त्व अर्थ तत्त्व के आगे और पीछे या पूर्व और अन्त में लगाया जाता है, अतः इसे पूर्वान्त योगात्मक कहा जाता है। जैसे - न्यूगीनि की मकोर भाषा में -’म्नफ = सुनना‘ और ’ज म्नफ उ = मैं तेरी बात सुनता हूँ।‘ उक्त उदाहरण में संबंध तत्त्व पूर्व तथा अन्त दोनों स्थानों पर आया है।

4. अन्त योगात्मक / पर प्रत्यय प्रधान - इस प्रकार की भाषाओं में संबंध तत्त्व अर्थ तत्त्व के अन्त में जोड़े जाते हैं, जैसे - यूराल अल्टाइक व द्रविड़ परिवार की भाषाएँ। उदाहरण - तुर्की भाषा में - एव = घर, एवलेर = कई घर, एवलेर इम = मेरे घर। कन्नड़ भाषा का एक उदाहरण देखिए - ’सेवक‘ शब्द का बहुवचन में विभिन्न कारकों में रूप -

कर्ता - सेवक-रु,

कर्म - सेवक-रन्नू,

करण - सेवक-रिन्द,

संप्रदान कारक में - सेवक-रिंगे आदि।

5. आंशिक योगात्मक या ईषत प्रत्यय प्रधान - यह भेद डाॅ. भोलानाथ तिवारी ने माना है। इस वर्ग की भाषाएँ यथार्थतः योगात्मक व अयोगात्मक वर्ग के बीच में पड़ती है। इन भाषाओं में योग व अयोग दोनों के ही चिह्न मिलते हैं। जैसे - बास्क, हौउसा, जापानी व न्यूजीलैण्ड तथा हवाई द्वीप की भाषाएँ।

(इ) श्लिष्ट योगात्मक भाषाएँ - इनमें सम्बन्ध तत्त्व को जोड़ने के कारण अर्थ तत्त्व वाले भाग में भी कुछ विकार पैदा हो जाते हैं, परन्तु संबंध तत्त्व की झलक अलग ही मालूम पड़ती है। रूप विकृत हो जाने पर भी संबंध तत्त्व छिपा नहीं रहता। उदाहरण - अरबी भाषा में - क् त् ल् के संयोग से बने शब्द कत्ल (मारना), कातिल (मारने वाला), क़तल (खून), यक्तुलु (वह मारता है), क़ित्ल (शत्रु) आदि बनते हैं।

संस्कृत में - वेद + इक = वैदिक, समाज + इक= सामाजिक बने हैं।

इस वर्ग की भाषाएँ संसार में सबसे अधिक उन्नत हैं, जिसमें सामी, हामी और भारोपीय परिवार की भाषाएँ आदि आती हैं। संस्कृत, ग्रीक, अवेस्ता, रूसी आदि की रचना प्रणाली एक जैसी है।